VAJIRAO & REDDY INSTITUTE
India's Top Potential Training Institute for IAS
+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

YOJANA MAGAZINE ANALYSIS
(योजना पत्रिका विश्लेषण)
(डिजिटल युग में कला और संस्कृति)
(March 2024)
(Part I)

TOPICS TO BE COVERED

- संपादकीय: डिजिटल युग में कला
- डिजिटल युग में पारंपरिक कला के स्वरूप
- भारत में लोकप्रिय संगीत

ADDRESS:
19/1A Shakti Nagar, Nagiya Park Near Delhi University, New Delhi - 110007 (India)

VAJIRAO & REDDY INSTITUTE
India's Top Potential Training Institute for IAS
+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

संपादकीय: डिजिटल युग में कला

भारत में कला एवं संस्कृति:

- कला एक ऐसी अभिव्यक्ति है जिसे हमारी इंद्रियां हमारे आसपास की चीजों को एक उद्यात परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हुए अनुभव और आत्मसात करती हैं। यह हमारे मन को अपने बाहर और अंदर जाकर सोचने का मौका देती है। यह मानवीय अभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली माध्यम है जो अवरोधों को तोड़ अनूठी पहचान कायम करती है।
- भारत, अनादि काल से, कला का केंद्र रहा है। चाहे दृश्य कला हो या प्रदर्शन कला वास्तुकला हो या कशीदाकारी। भारत में कला की यात्रा विभिन्न युगों और क्षेत्रों में प्रचलित संस्कृति और मान्यताओं के अलग अलग प्रभाव के साथ विकसित हुई है।

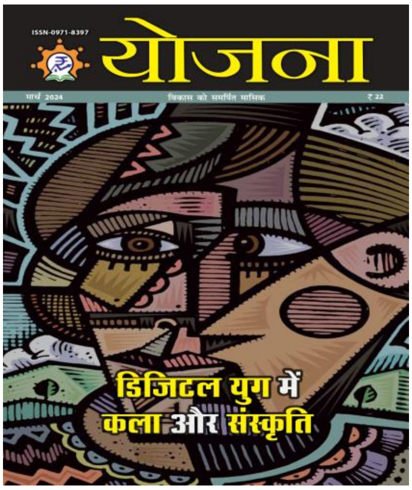

- हमारी प्राचीन चित्रकला, कलाकृतियां और उनके इर्द-गिर्द बुनी गई संस्कृति इतिहासकारों और समाजशास्त्रियों के लिए समाज और लोगों को समझने का एक अनिवार्य माध्यम रही हैं।

ADDRESS:
19/1A Shakti Nagar, Nagiya Park Near Delhi University, New Delhi - 110007 (India)

डिजिटल युग में कला और संस्कृति में नाटकीय बदलाव:

- तेजी से बदलते डिजिटल युग में कला और संस्कृति के क्षेत्र में भी नाटकीय बदलाव हो रहे हैं। रचनात्मकता और प्रौद्योगिकी के संगम से एक नया युग आया है जहां नवाचार की कोई सीमा नहीं है और पुरानी सीमाएं धूमिल हुई है।
- डिजिटल युग के आगमन के बाद से कला और संस्कृति क्षेत्र में बहुत ज्यादा उथल-पुथल हुई है। इंटरनेट युग ने रचनात्मकता का लोकतंत्रीकरण किया है। इसने कलात्मक अभिव्यक्ति को सभी के लिए सुलभ बना दिया है।
- प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करके इच्छुक कलाकार आसानी से सुलभ सॉफ्टवेयर, सोशल मीडिया और ऑनलाइन गैलरी के उपयोग से अपना काम दुनिया भर के दर्शकों के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं।
- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का अब संस्कृति के केंद्र के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है, यह प्लेटफॉर्म चर्चाओं, रुझानों और यहां तक कि सामाजिक आंदोलनों को आकार देते हैं।
- लोकप्रिय संस्कृति को डिजिटल युग में उभरे इंटरनेट सुपरस्टार, इन्फ्लुएंसर्स (प्रभावकों) और वायरल सामग्री द्वारा आकार दिया जा रहा है। श्रोताओं और दर्शकों से जुड़ने के लिए सृजनकर्ताओं द्वारा मल्टीमीडिया और परस्पर संवाद का उपयोग किया जा रहा है। आजकल

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

गैलरी और संग्रहालयों ने भी आभासी प्रदर्शनियों और आभासी दौरों की शुरुआत की है इससे कला प्रेमियों को अपने घर में आराम से बैठकर विभिन्न कलाएं देखने की सहूलियत हुई है।

- डिजिटल कला स्वरूपों (Non Fungible Tokens) ने कला जगत को पुनः परिभाषित किया है। इससे कलाकारों को विशिष्ट संपदा के रूप में बाजार में पेश करने की सहूलियत मिली है। NFT कलाकारों को भौतिक दुनिया से परे अपनी कलाकृति बेचने या किराए पर देने की भी सहूलियत देती है।

डिजिटल युग में कला से जुड़े नैतिक मुद्दे:

- जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी कलाकृति के परिदृश्य को बदल रही है, नैतिक विचार तेजी से प्रासंगिक होते जा रहे हैं।
- डिजिटल युग में कला के स्वामित्व, कॉपीराइट और मूल्य से जुड़े मामले सामने आए हैं। जैसे-जैसे हम इन मामलों से जूझते हैं ये समस्याएं हमारी बदलती डिजिटल संस्कृति का आवश्यक घटक बन जाती हैं।
- डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान को आसान बना दिया है, यह दूसरी संस्कृतियों के लोगों के साथ बातचीत करने और उनके बारे में जानने का मंच उपलब्ध कराता है। लेकिन साथ ही यह प्रामाणिकता और सच्चाई पर भी कई सवाल खड़े करता है।

- डिजिटल युग में सोशल मीडिया, वैश्वीकरण और प्रौद्योगिकी सभी तरह के अवसरों और कठिनाइयां पर असर डालते हैं। यह बहुत जरूरी हो जाता है कि हम डिजिटल युग द्वारा उठाए गए नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को स्वीकार करें, साथ ही हम जिस गतिशील वातावरण से गुजर रहे हैं उसे देखते इसकी क्रांतिकारी क्षमता को समझना भी उतना ही महत्वपूर्ण हो जाता है।

डिजिटल युग में पारंपरिक कला के स्वरूप:

परिचय:

- किसी भी सभ्यता की कलात्मक परंपराएं उसके संस्कृत ढांचे का निर्माण करती हैं। इसकी प्रगतिशील यात्रा विभिन्न कलाओं और उनके उत्कृष्ट रूपों द्वारा प्रदान की गई एक रूपरेखा के साथ बनाई गई है, एक ऐसा तथ्य जो बहुविविधता से जुड़े होने पर भी आज के डिजिटल युग में भी नहीं बदला है।

- आज की पीढ़ी ने बहुआयामी समीकरणों पर विचार-विमर्श शुरू कर दिया है और संभवत उन्हें हमारी कलात्मक परंपराओं को प्रौद्योगिकी के साथ विलय का रास्ता खोजे बिना संतुष्ट नहीं किया जा सकता है।
- सहस्राब्दियों से जो कुछ भी हमारे साथ चला हुआ आज हमारी सांस्कृतिक संस्था बन गया है। वैश्विक परिपेक्ष के दृष्टिकोण से बात करते हुए हमारी यात्रा के हर पड़ाव पर, शाश्वत का आह्वान करते हुए हमने सर्वोत्कृष्टता को बरकरार रखा है और अब हम एक और दहलीज के कगार पर हैं, वह है डिजिटल युग।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- हमारे उत्कृष्ट सांस्कृतिक/कलात्मक परंपराओं के संरक्षण विस्तार और उत्थान के लिए हमारा दृष्टिकोण क्या हो सकता है? इसका उत्तर शायद हमारे कला रूपों को आज की भविष्यवादी दुनिया अर्थात डिजिटल दुनिया से जोड़ना है।

कला के सृजन में डिजिटल माध्यमों का प्रयोग:

- डिजिटल इंटरफेस के माध्यम से विभिन्न कलाप्रवीण तकनीक को जोड़ने का क्रांतिकारी विचार पहले से ही कई क्षेत्रों में कई कलाकारों द्वारा तेजी से अपनाया जा रहा है। इनमें मूर्तिकार, कलाकार, चित्रकार, लेखक, डिजाइनर, कांच और मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कारीगर, बुनकर, वास्तुकार और बहुत कुछ शामिल है।
- इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों और कंप्यूटर कोड का उपयोग करके डिजिटल कलाकार विशिष्ट डिजाइन टैबलेट के माध्यम से अपनी अनूठी कला-कृतियां बनाने में सक्षम है।
- कला का डिजिटलीकरण कलाकार को अत्यधिक विविधता और सहजता प्रदान करता है। विजुलाइजेशन के साथ प्रयोग विभिन्न विषयों के मिश्रण को सक्षम बनाता है अद्वितीय और कल्पनाशील परिणाम प्राप्त करने के लिए घटकों के साथ अन्वेषण के विविध स्तर प्रदान करता है। इंटरैक्टिव मल्टीमीडिया तत्वों, इंस्टॉलेशन और 2डी, 3डी या 4डी अनुमानों के साथ-साथ आभासी वास्तविकता, संवर्धित वास्तविकता जैसी अत्याधुनिक अवधारणाओं के

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

माध्यम से प्रौद्योगिकी की मदद से कला की उत्कृष्ट कृतियों को बनाने और लोकप्रिय बनाने की अथाह गुंजाइश होती है।

डिजिटल युग परंपराओं के प्रति समर्पित कला प्रेमियों के लिए चिंता का विषय:

- कलात्मक परंपराएं बदलती रही हैं और बदलती रहेंगी, क्योंकि रचनात्मकता निरंतर विकसित होने वाली घटना है। क्योंकि जब तक यह समय के साथ विकसित नहीं होगी वह समाप्त की ओर बढ़ सकती है।
- उल्लेखनीय है कि डिजिटल एनहैंसमेंट तकनीक अपनी यात्रा को मानव जाति के साथ समन्वित रखने में सहायक रही है और इस तथ्य को शायद ही कोई और स्वीकार कर सकता है फिर भी यहां की परंपराओं के प्रति समर्पित प्रेमियों के लिए यह एक चिंता का विषय है।
- एक पारंपरिक कला रूप प्रामाणिकता और शिल्प कौशल का प्रतीक है जो सदियों से पूजनीय रहा है। एक शिल्पकार द्वारा इसमें डाला गया कौशल समर्पण और व्यक्तित्व का तत्व और मानवीय स्पर्श या मानवीय हाथ से उत्पन्न होने वाली खामियां और सूक्ष्मताएं कालातीतता की भावना पैदा करती है। मानव सृजन का यह कभी न मरने वाला वाला सार है, जो उभरने की तैयारी कर रही पीढ़ियों में नया जीवन फूंकता है।
- इलेक्ट्रॉनिक कलात्मकता के लिए मशीन-निर्मित उपकरण को स्वीकार करना इस क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा हमेशा स्वागत योग्य नहीं होता है। इसका कई अलग-अलग कारण हो सकते

हैं, जैसे सदियों पुरानी मान्यताएं, पारंपरिक स्वभाव, ज्ञान या तकनीकी जानकारी की कमी या क्षेत्र की अवधि या शिक्षा से संबंधित अन्य बाधाएँ।

- लेकिन उनके अपने आप में एक संस्था होने के बारे में शायद ही कोई संदेह हो सकता है- उन्मुक्त शहरों से दूर, दुनिया के किसी शांतिपूर्ण कोने में बसे हुए हमारे कुछ अमूल्य कला रूपों के अमूल्य संरक्षक हैं। बिना किसी संदेह के वे ऐसा करना जारी रखेंगे, चाहे तकनीक उनसे कितनी भी आगे क्यों ना बढ़ जाए।

डिजिटल तकनीक कला रूपों के प्रदर्शन का बेहतर माध्यम:

- इसलिए मानव के हाथ से प्रौद्योगिकी के छीनने का कोई सवाल ही नहीं है। लेकिन उपलब्ध समर्थन को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है और ना ही किया जाना चाहिए। कलात्मक कल्पना के साथ प्रौद्योगिकी का विलय एक स्पर्शनीय और भावनात्मक पहलू हो सकता है जिसे निश्चित रूप से और अधिक खोजा जा सकता है।
- वही जब कला रूपों के प्रदर्शन की बात आती है, तो जांच की जाने वाली एक और परत होती है, प्रदर्शन कलाओं की मूर्तता सदैव विशिष्ट है और रहेगी।
- प्रदर्शन की महारथ जो भौतिक रूप से प्रदर्शित होती है, दर्शकों द्वारा उतनी ही खूबसूरती से आत्मसात की जाती है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- इस प्रभाव को सांसारिक-भौतिक जुड़ाव के माध्यम से बढ़ाया जाता है जिससे कलाकार दर्शकों के साथ जुड़ाव स्थापित करने में सक्षम होता है। यहां डिजिटलीकरण बाहरी भूमिका से परे अनुप्रयुक्त लगता है परंतु उनके प्रतिस्पर्धात्मक रूप में बने रहने के लिए अपेक्षित प्रचार उपकरण प्रदान करता है।

'कला-कलाकार-दर्शक' तिकड़ी को करीब लाने में भी उपयोगी:

- इंटरनेट या डिजिटल युग न केवल प्रदर्शन के लिए बेहतर पहुंच और जागरूकता पैदा करने के लिए कई रास्ते प्रदान करता है, बल्कि यह हमें 'कला-कलाकार-दर्शक' तिकड़ी को करीब लाने के लिए, उच्च तकनीक उपकरण भी प्रदान करता है।
- सोशल मीडिया और अन्य साइबर प्लेटफार्म के माध्यम से कलात्मक प्रदर्शन को लोकप्रिय बनाने में मदद करके डिजिटल दुनिया ढेर सारे अभियान पेश करती है और बड़ी हुई रूचि और बेहतर प्रक्रिया पैदा करने में मदद कर सकती है।
- प्रदर्शन कला रूपों को बढ़ावा देने में डिजिटल मीडिया की भूमिका काफी चमत्कारी रही है। समर्पित डिजिटल मीडिया अभियानों के माध्यम से बहुत सारे डर्बल या मरते हुए कला रूपों में पुनरुत्थान को देखा गया है।
- लंबे समय से खोये हुए कई कलाकार सोशल मीडिया नेटवर्क के माध्यम से खोज करने वाले प्रतिबद्ध अनुयायियों के उत्साही प्रयासों से गुमनामी से फिर से उभरे हैं। बहुत सारी सोई हुई

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

कला तकनीक को उत्साही लोगों द्वारा पुनर्जीवित किया गया है, जो इसे हमेशा के लिए खो जाने देने के लिए तैयार नहीं है।

आगे का रास्ता:

- इस प्रकार संकेत को समझते हुए एक मिश्रित दृष्टिकोण रखना ही समाधान नजर आता है, जिसमें मानव रचनात्मकता अपने मूल स्थान पर और अपरिवर्तनीय रूप से बनी रहती है, जबकि इसके बढ़ते प्रभावों को डिजिटल कामकाज के माध्यम से प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- डिजिटलीकरण के प्रभाव का उपयोग संवर्धन के लिए किया जाना चाहिए ना की सृजन के लिए।

भारत में लोकप्रिय संगीत:

परिचय:

- लोकप्रिय संगीत एक ऐसी शैली है जो हाल ही में पारंपरिक संगीत से उभरी है। यह एक प्रकार का संगीत है जो जनमानस की इंद्रियों को आनंदित करता है। यह पूरी तरह से नियमों से रहित नहीं है, हालांकि लोकप्रिय संगीत में यह नियम शास्त्रीय संगीत की तुलना में कम कठोर है।

- यह पारंपरिक संगीत से बहुत अलग लगता है फिर भी इसकी जड़े उसे परंपरा में है जहां से इसका विकास हुआ है। इसके अस्तित्व का प्रमुख कारण वर्तमान संगीत में नवीनता की आवश्यकता है। संगीत की 'ताजगी' या 'नयापन' लोकप्रिय संगीत का एक महत्वपूर्ण तत्व है क्योंकि इसका उद्देश्य जनता को संतुष्ट करना है।
- उल्लेखनीय है कि लोकप्रिय संगीत विविधतापूर्ण होता है इसके अंतर्गत नाट्य संगीत, फिल्म संगीत, बैंड संगीत, भाव संगीत, अभंग, भजन और भक्ति गीत जैसे कई रूप होते हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

नाट्य संगीत:

- भारत में राजशाही समाप्त हो गई और शास्त्रीय संगीत और संगीतकारों को कोई संरक्षण नहीं मिला। ऐसे में संगीत और संगीतकार दोनों ही अपनी आजीविका के लिए पूरी तरह से लोगों पर निर्भर हो गए।
- लोगों पर इसकी निर्भरता के परिणामस्वरूप जनता को आकर्षित करने के लिए संगीत के प्रारूप में बदलाव आया। प्रशंसा और मनोरंजन के लिए एक संपूर्ण ख्याल प्रस्तुति को छोटी-छोटी रचनाओं में प्रस्तुत किया गया।
- इन रचनाओं को रंगमंच के एक हिस्से के रूप में प्रस्तुत किया गया और इसलिए इस इन्हें रंगमंच संगीत या नाट्य संगीत कहा जाता है।
- इसकी लोकप्रियता तब चरम पर पहुंच गई जब दर्शकों ने संगीत नाटकों के अनुभवों का बार-बार आनंद लिया कुछ गानों को बार-बार गाने का अनुरोध किया गया। समय के साथ-साथ गानों की लोकप्रियता बड़ी बढ़ती गई और दर्शक नाटकों के दौरान बार-बार गाने की फरमाइश करते रहे। परिणामस्वरूप संगीत नाटक के नाट्य पहलू की तुलना में यह संगीत समृद्ध और लोकप्रिय हो गया।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

फिल्म संगीत:

- भारत में फिल्म संगीत लोकप्रिय संगीत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह अपने आप में ही एक अलग तरह का संगीत है। पश्चिमी फिल्मों के विपरीत भारतीय सिनेमा में बड़े पैमाने पर गाने होते हैं जो इसका एक अभिन्न अंग है।
- भारतीय सिनेमा की शुरुआती वर्षों में गाने मुख्य रूप से कहानी को आगे बढ़ने का हिस्सा हुआ करते थे। कहानी में गाने का उपयोग करने का विचार नाट्य संगीत के कारण अस्तित्व में आया।
- 1920 के दशक में पश्चिम से भारत में रिकॉर्डिंग तकनीक आने के बाद संगीत क्षेत्र में फिल्म संगीत का विकास हुआ। इसने भारत में संगीत बनाने के तरीके को ही बदल दिया।
- फिल्म संगीत के शुरुआती दौर में शास्त्रीय राग पर आधारित गाने हुआ करते थे, लेकिन 1980 के दशक में ध्वनि प्रौद्योगिकी में आई प्रगति ने फिल्मों में संगीत के महत्व को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया। अब फिल्म संगीत की रचना शैलियों में इलेक्ट्रॉनिक ध्वनियों की प्रचुर मात्रा में उपयोग की मांग बढ़ी थी।
- उल्लेखनीय है कि मौजूदा समय में भी फिल्मों में गाने कहानी का हिस्सा होते हैं।

बैंड संगीत:

- भारत में बैंड संगीत ने 1980 के दशक में आकर लेना शुरू किया और 1990 के दशक तक पूरी तरह से स्थापित हो गया।
- 'इंडियन ओशियन' भारत के अग्रणी और बहुत लोकप्रिय बैंड में से एक था। इसका जन्म नया संगीत बनाने की आवश्यकता से हुआ जब संगीतकार मित्रों के एक छोटे समूह में मिलकर अपनी पहली रचना तैयार की। 'इंडियन ओशियन' ने कबीर द्वारा लिखित गीतों को चुना और अपना संगीत स्वयं तैयार किया। तथ्य यह है कि सदियों पुराने कबीर ग्रंथ आज भी इतने प्रासंगिक हैं कि 'इंडियन ओशियन' जैसा लोकप्रिय बैंड भी एक नए ग्रंथ लिखने के बजाय इन ग्रंथों को चुनता है।
- उल्लेखनीय है कि धीरे-धीरे बैंड संगीत अपने आप में लोकप्रिय संगीत की एक महत्वपूर्ण शैली बन गया है। बैंड संगीत में कोई एक कलाकार मुख्य कलाकार नहीं होता है। बैंड संगीत में पूरा समूह ही मायने रखता है।
- यह लोकप्रिय संगीत व्याकरण ढांचे नियमों और विनियमों से बंधा हुआ नहीं है। यह संगीत सृजन पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है जो मनभावन और मनोरंजक है और समानांतर रूप से दर्शकों को एक निश्चित संदेश देता है।

क्षेत्रीय लोकप्रिय संगीत (भाव गीत या भाव संगीत):

- भाव संगीत या भाव गीत भारत की सभी क्षेत्रीय भाषाओं में गाए जाते हैं। इन्हें सुगम संगीत भी कहा जाता है।
- संगीत के इस रूप में आवाज का प्रयोग शायद ही कभी पूरे कंठ से होता है जिसमें शब्दों और भावनाओं का अत्यधिक महत्व महसूस होता है। गाने की पूरी संरचना बहुत ही मधुर है और इसमें लय की विभिन्न पद्धतियों का उपयोग किया जाता है।
- संगीत का सरल रूप होने के कारण लोकप्रिय संगीत को जनता द्वारा अधिक सराहा जा सकता है। प्रत्येक खंड की समय अवधि कुछ मिनट तक सीमित है जिससे आम दर्शकों के लिए इसे बैठकर सुनना आसान हो जाता है।

निष्कर्ष:

- उल्लेखनीय है कि प्रत्येक प्रकार के संगीत की एक निश्चित भूमिका होती है। ध्रुपद और ख्याल संगीत के गंभीर रूप हैं और मनोरंजन के लिए नहीं है, जबकि लोकप्रिय संगीत, संगीत का एक सरल रूप है और मनोरंजन पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
- संगीत के यह सभी रूप रतन की तरह है जो संगीत की पूरी दुनिया को विशाल विविध और समृद्ध बनाते हैं।